पूर्वोत्तर सृजन पत्रिका : विशेषज्ञों द्वारा समीक्षित अर्धवार्षिक हिंदी ई-पत्रिका
वर्ष: 1, संख्या: 1; जुलाई-दिसंबर, 2020

लाइसेंस

डॉ. जमुना देबनाथ

शीशे के सामने होठों के ज़ख़्मों पर लाली रगड़ने की कोशिश में लाल, बादामी...तो कभी कॉफ़ी कलर, लाल ही ठीक लगी, बाकी.... बेअसर। ओह !....स्स्स्स्स.....कितना जल रहा है, निचला भाग ज़्यादा घायल लग रहा है। कंघे पर तोले भर बाल आ गये। हाँ.....कल मुट्ठी में.....रात रोते-रोते कब नींद आ गयी पता नहीं चला। कोमल ने सूजे हुए घाँव पर गरम सेंक दी, पर सूजन में कुछ खास असर नहीं पड़ा। लाल साड़ी के साथ काले रंग का ओवरकोट, मफ़लर को गले से ऐसे लपेटा जिससे निचला होंठ छिपने की कोशिश कर सके। पाँव डगमगा रहे थे , फ़िर भी किसी तरह सीढ़ियाँ उतर आई। सूजी हुई एड़ियाँ और घुटने पर चिपका सूखा खून रात का फ़साना बयाँ कर रहा था। पर्स को बगल में टाँगे धीरे-धीरे उतरती सीढ़ियों को ताकती रही। रात की घटना...नहीं नहीं...दुर्घटना कहना अधिक समीचीन होगा, क्रमानुसार आँखों के सामने आते जा रहे। आज सीमा को सब पता चल जायेगा.....कैसे कहूँगी उससे कि मेरे साथ.....।

किसी तरह दफ़्तर पहुँची। मनोज ने घड़ी की तरफ़ इशारा करते हुए कहा-“ क्या मैडम....आज फ़िर लेट!” पाँव घसीटते हुए केबिन में गयी, इतने में तिलक ने खबर दी- “दो घंटे बाद रिकॉर्डिंग है, एडिटिंग साथ-साथ होगी। ” मैंने आँखों से इशारा कर दिया। पिछले कई दिनों का काम भी पैन्डिंग पड़ा है, कैसे करूँ.... समझ नहीं आ रहा। किसी के सामने जाने की इच्छा नहीं हो रही। बिन्दू तो देखते ही सवाल कर बैठेगी- “क्या चल रहा है ?....उँउउउउ....शायद मौसम बेईमान है(हँसते हुए)....या..आशिक !” उसे तो सिर्फ़ मज़ाक करना और उड़ाना आता है। दिन भर शेरों-शायरियों में उलझी वो..मेरी हालत क्या समझेगी। पता नहीं दूसरों की ज़िन्दगी में झाँकने का शौक लोगों को क्यों होता है भला! “अंदर आ जाऊँ? या फ़िर...” सीमा ने केबिन के दरवाज़े से आवाज़ लगाई।

“औपचारिकता क्यों निबाह रही है सीमा?”

“तेरा मूड शायद अच्छा नहीं.....ओकेकेकेके....बाद में आती हूँ (वापस मुड़ते हुए)। ”

“उफ़...तू भी ना.....बैठ।”

“कुछ हुआ है?”

“क्या?” (सवालों से बचने के लिए दराज से फ़ाइल निकालने लगी)।

“अ..अ...अ.....सौरभ औरररर.. तेरे बीच?”

ऐसा लगा, डंक लगे घाव पर किसी ने सुई चुभोई, “हूँउँउँउ...कुछ कहा तूने ?”

“बचने की कोशिश....और वो भी मुझ से!”

पता था.... चेहरे के भाव पढ़ने में उसने पीएच.डी की है।

“जानती हूँ, तूने भाँप लिया। तुझसे कुछ छिपा नहीं पाती...... कितनी भी कोशिश कर लूँ”(आँसुओं को पलक से पोंछते हुए)।

“मैत्री! ...न न....बता क्या हुआ?..अरे....च्च्च....सम्भाल खुद को। ए...ए...”

“............”

“अच्छा चल कहीं बाहर से होकर आते हैं....अरेरेरे पागल....।” अपने अंक में भरकर मुझे सम्भालते हुए गाड़ी में बिठाया और मयूरी चलने को ड्राइवर से कहने लगी। हमारा कॉलेज के दिनों से वहां आना-जाना था। “बसस्स्स्स्स.... गाड़ी को सही जगह पार्क करना”। धीरे से कंधा देते हुए उसने नीचे उतारा और हम टेबल पर जा बैठे।

“...हेलो..दो कप कॉफ़ी विद सैंडविच....तू और कुछ लेगी...।”

“नहीं...।”

“सुनिए....पहले ज़रा पानी भिजवाइएगा?”

“अच्छा बता....तुझे चोट लगी याआआआआ...?” चेहरे पर गम्भीरता ओढ़े, शक की निगाहों से उसने मुझे देखा।

“नहीं..कल लाईट चली गयी तो अंधेरे में पाँव......।”

“नाटक बंद कर, कोमल ने सुबह फ़ोन पर बताना चाहा... कह न पाई....रोने लगी”। उसने होठों पर उंगलियाँ फ़ेरते हुए मुझे देखा जैसे जान गयी हो कि क्या हुआ। “ सौरभ आया था, रात को?”

“हाँ। मैंने ही खाने पर बुलाया था” (नज़रे चुराते हुए)।

“तुझे कितनी बार समझाया, उसे अवॉइड कर। डोन्ट थिंक अबाउट हिम (माथे पर हाथ रखकर) तुझे समझ नहीं आता ?”

“नाराज़ मत हो, मेरी बात सुन एक्चुअली मैंएए.......”

“चुप हो जा...तुझ पर जो बीत रही है....तेरे ही कारण,समझी। तुझ जैसी लड़कियों को भला कौन समझा सकता है....यूज़लैस..। आखिर तू उसे छोड़ क्यों नहीं देती..?”

“जानती हूँ, तुझसे ये सब देखा नहीं जाता। पर....पता नहीं ... मैं क्यों उससे बँधी हुई हूँ!!!! क्या हैं जो उससे मुझे बाँधे हुए हैं?”

"कल क्या हुआ था ? और तूने मुझे फ़ोन क्यों नहीं किया ? मुझे अपना नहीं समझती ?" मेरी हथेली को अपनी मुट्ठियों में भींचते हुए वो सजल हो आई।

"सीमा....तू भी अगर...."

"आइ एम ओके....बता क्या हुआ ?"

बहुत दिनों से काम के चलते मैं सौरभ को समय नहीं दे पा रही थी। दो दिन पहले उसने मिलने को कहा.. तो मैंने खाने के बहाने उसे घर पर बुला लिया। कोमल भी दस दिनों के लिए होस्टल से आई हुई है। पता नहीं कल वो कुछ उदास लग रहा था, मैंने पूछा भी....(लम्बी साँस भरते हुए) पर बोला नहीं। हमेशा की तरह खाने के बाद सिगरेट मुँह में दबाए बालकनी में आया।"तो तुम दिल्ली जाओगी ?" सौरभ ने धुएँ से छल्ले बनाते हुए पूछा।

"हाँ....इच्छा तो है। वैसे भी अब मैं सीनियर हूँ...तो"

"ओह!!! तो तुम्हें ही जाना होगा...राइट?"

वो उस वक्त मुझे ऐसे घूर रहा था जैसे शिकार करने से पहले शेर अपने शिकार को देखता है....भूखी नज़रों से, जैसे अभी मेरे हाड़-मांस उधेड़कर खा जायेगा। उस दिन उसकी कंजी आँखों में प्यार नहीं... बल्कि हवस का सुरूर नज़र आ रहा था। मैं कमरे में आना चाह रही थी कि उसने जलती सिगरेट मुँह से निकाल फ़ेंकी और तैश में आकर मेरे कंधे को झटकते हुए बोला- "क्या हुआ उन कसमों, वादों और क्या कहते हैं..... हाँ, तुम्हारे प्यार का? क्या हुआ? कहा था न.....कहा था न, कि तुम्हें छोड़कर कहीं नहीं जाऊँगी....हम साथ रहेंगे.....एक साथ....जल्द ही शादी कर लेंगे.....कहा था? याद है मेम साहब या याद दिलाऊँ .....अब क्या हुआ...बोल ? साआआली! नौकरी क्या मिल गयी, सोचती है अब जो चाहूँ करूंगी....आखिर तू कमाती है....आत्मनिर्भर है...सौरभ!.....वो क्या कहीं भागा जा रहा है?.....यही सोचती है न तू?"

मैंने झटककर उसे अलग किया "तुम मुझे चोट पहुँचा रहे हो सौरभ! वॉट्स योर प्रोबलम?"

"अरे मैत्री....तू कह नहीं सकती थी कि चले जाओ, दरकार नहीं है तुम्हारी !" (सीमा ने बात को सुनते हुए टोका)

"सब कुछ इतना आसान नहीं होता। कभी-कभी हम ज़िन्दगी के ऐसे मोड़ पर आकर खड़े हो जाते हैं कि वहां से वापस पीछे कदम रखना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन हो जाता है। " (वेटर कॉफ़ी ले आता है)।

"ह्म्म्म....नाईस कॉफ़ी... है न ?" सीमा ने वातावरण को हल्का करते हुए कहा। "पता है? यहां की कॉफ़ी मज़ेदार है। याद है...कॉलेज के दिनों में मैं जिससे भी फ़्लर्ट करती उसे यही ले आती। तब तो अपुन का फ़ंडा था 'खाओ, पीओ और चलते बनो' तू तब कितना डाँटती थी ना...'ऐसा मत कर सीमा बाद में फ़ँस जायेगी।

प्यार-व्यार कुछ नहीं होता.... सब टाइम पास है....मस्ती है...वगैरह-वगैरह' तू तो मानती ही नहीं थी पर अब.....मैं तो कइयों को नचा कर निकल आई और तू.....तू तो खुद नाच रही है"।

सीमा ने मैत्री को टिशु पेपर थमाते हुए कहा, "देख तूने तो अपने जीवन की डोर ऊपरवाले के हाथ से खींचकर शायद सौरभ को थमा दी है। मानती हूँ मैंने जो किया वो सही नहीं, पर लोगों के साथ चलकर ही उन्हें समझा जाता है। खैर! फ़िर मेरी बात कुछ और थी। मैंने ज़िन्दगी की रेल के हर एक डिब्बे में सफ़र किया है मैडम... उसमें बैठे हर इन्सान की भूख देखी है.... जो समय-समय पर ज़ायक़ा बदलने की फ़िराक में रहते हैं।"

"....." एक लंबी खामोशी को चीरते हुए सीमा ने प्रश्न किया।

"खैर....आगे बता, क्या हुआ फ़िर ?"

"उस दिन मुझे भी गुस्सा आ जाता अगर कोमल घर पर नहीं होती तो। किसी तरह खुद को सम्भाला। सौरभ ने नौकरी छोड़ने की बात सात महीने पहले भी की थी। उसे डर है..कहीं मैं नौकरी के बहाने उससे दूर न चली जाऊँ। पता है सीमा...कभी-कभी जिसके प्रति हम असुरक्षा की भावना से ग्रस्त होते हैं अक्सर जाने-अनजाने पोज़ैसिव होकर उसी पर आघात कर बैठते हैं.....जो उस दिन सौरभ ने.....।"

"क्या.....क्या किया.....बता ?"

"उससे खुद को छुड़ाकर मैं कमरे में जाने लगी। लगा.. शायद मेरे इस तरह चले जाने से उसे गलती का एहसास होगा...पर.....पर हर बार की तरह मैं गलत थी। उस दिन उसका इरादा क्या था... भाँप नहीं पाई। वो भी पीछे-पीछे बैठक में आया। कोमल कमरे में पढ़ रही थी। उस तक हमारी बातें न पहुँचे...मैंने कमरे का दरवाज़ा बंद कर दिया। "

"मैत्री... लगा वो अभी कहने वाला है- सॉरी मुझे माँफ़ कर दो,पता नहीं मुझे क्या हो गया था। मैंने तुमसे बद्सलूकी की है....आई एम सॉरी जान।".....लेकिन उसने कुछ और ही कहा।

"तुम दिल्ली नहीं जाओगी ।" चटका हुआ काँच...उसकी बातें सुनते ही बिखर कर चूर हो गया।

"क्यों ?" (मैत्री तिरछी नज़रों से सौरभ की ओर घूरने लगती है)

"क्योंकि मैं कह रहा हूँ ?" उसने सिगरेट फ़िर सुलगा ली। मुझसे और रहा नहीं गया।

"देखो...यह मेरी इच्छा है। मैं जाना चाहती हूँ.....मुझे रोको मत। वैसे... चाय लोगे ?" असल में चाय के बहाने मैं कमरे से दूर जाना चाहती थी।

"तुम्हें मेरी कोई फ़िक्र नहीं ? मैं तुम्हारा होने वाला पति हूँ ! " उसे जब कोई रास्ता नज़र नहीं आया, तो उसने आखिरी हथियार उठाया। शायद उसे लगा होगा कि उसकी बातें सुनकर मेरा

मन बदल जायेगा। मेरे अंदर रहने वाली भारतीय नारी जग जायेगी। मैं उसके किसी प्रलोभन में आने वाली नहीं थी ।

"ओहहह....प्लीज़ इन बातों से मुझे कमज़ोर बनाने की कोशिश मत करो। और क्या कहा तुमने...पति! अभी तो हुए भी नहीं और.....।"

"और क्या? हाँ....क्या कहना चाहती हो?"

"पति होने का एक भी गुण तुम्हारे भीतर नहीं। अफ़सोस....मैंने तुमसे प्यार किया....तुमने मेरे मन को कभी पढ़ने की कोशिश की?....कभी जानना चाहा कि मैं क्या चाहती हूँ?.....मेरी खुशी क्या है?.....दो-एक ज़िम्मेदारी निभा लेने से, औरत के गले में काला पट्टा और माँग में रंग चढ़ा देने मात्र से ही कोई आदमी पति-परमेश्वर नहीं बन जाता। समझे ?" मुझे भी गुस्सा आ गया सीमा....।

"हाँ...आ...मेरी जगह मनोज होता तो शायद तुम....।" (सिगरेट फूँकते हुए सौरभ कटाक्ष करता है)

"माइंड योर लैंग्वेज.....क्या कहना चाहते हो ?.....मनोज मेरे साथ काम करता है....तुम उसे क्यों..."

"क्यों.....दिल पे लगी ना....मेरे पीठ पीछे क्या करती हो, खूब जानता हूँ ।"

"तुमसे और उम्मीद ही क्या की जा सकती है, जानती थी ! जब ओखली में सिर दे ही दिया, तो मूसलें पड़नी ही है। कभी-कभी सोचती हूँ.... सीमा सही कहती है.....तुम.....तुम मेरे लायक नहीं। चले जाओ (बैठक घर के दरवाज़े को मैत्री गुस्से में ज़ोर से खोलती है)... मुझे तुमसे बात नहीं करनी। वैसे भी रात बहुत हो गयी है, घर जाओ। इस बारे में हम बाद में बात करेंगे।"

मैं वाशरुम जाने लगी, तभी सौरभ को न जाने क्या हुआ-उसने मेज़ पर रखे फ़ूलदान को खिड़की पर दे मारा। "ओह! माई गॉड !!! क्या कर रहे हो ? आखिर...क्यों...? तुम निकलो मेरे घर से.....निकलोओओ..।" मैं उसे देखकर अचंभित हो गई। अचानक वो कमरे में कुछ ढूढ़ने लगा। मैं कुछ समझ नहीं पाई वो क्या चाहता है, तभी कोमल ने दरवाज़ा खटकाया। उसे शायद अंदेशा हो गया था कुछ होने वाला है। कोमल को शायद हमारी बातें सुनाई दे रही थीं। दरवाज़ा खोलने जा रही थी कि झट से सौरभ ने मुझे दबोच लिया और..." (टिशु पेपर से आँसुओं के सैलाब को रोकने की कोशिश करते हुए)।

"और क्याआआ....बता ना....क्या किया उसने...?"

"....."

"मैत्री....चुप हो जा....आगे क्या किया उस कमीने ने..?"

"....."

"क्या उसने ज़बरदस्ती....?"

"हाँ....शायद इरादा यही रहा होगा उसका.. पर....." (आँखों का पानी जैसे गले में उतर आया)।

"क्या ....किया क्याआ....बोल ?"

".....उसके एक घिनौने रूप से मेरा सामना हुआ सीमा....मैं टूट गयी हूँ। उसके दिए गये ज़ख्मों को मेरे जिस्म पर तू देख सकती है। कोमल अगर न होती, तो शायद वो .....मार- पीट तक ही नहीं, बल्कि....मेरी इज़्ज़त को तार तार कर बैठता.....।

"कोमल ने ये सब.....सब देखा उस रात?"

"हाँ ..वो बाहर निकल आई और उसने ही सौरभ से मुझे.....(मैत्री के गालों पर आती एक-एक बूँद उस रात की कहानी को गढ़ रही थी)।"

"ओह.....मैं तो सोच भी नहीं सकती कि वो इतना....बड़ी से बड़ी गाली भी छोटी लग रही है उसके लिए"

"हूँ....मुझे भी क्या पता था ? कोमल ने उस दिन सौरभ को बहुत कुछ कहा....वो मेरी हालत देखकर घबरा गयी। मेरे होंठ से खून बह रहा था और घुटना भी बुरी तरह छिला हुआ था.....खुद को छुड़ाने की हड़बड़ाहट में मेज़ से टकराई और गिर पड़ी। "

"कॉफ़ी खत्म कर....." (सीमा कॉफ़ी पीते-पीते एक गहरी सोच में डूब गयी)।

"हम्म्म्म....अब क्या प्लान है तेरा....? मैं कहती थी न, वो तेरी कामयाबी से जलता है....वो खुद क्या है ? एक मामूली क्लर्क और तू ऊँची पोस्ट पर है। तुझे सब मैडम कहते हैं और उसे....। तुझे बहुत अच्छे लड़के मिल जाएँगे। अरे! उस जैसे तो तेरे अधीन रहकर काम करते हैं और वो किस बात की इतनी गर्मी दिखाता है....साआलाआ....मिल जाए, उसकी इज़्ज़त तो मैं नीलाम करूंगी, औरत को कमज़ोर समझता है ? बुरा मत मानना मैत्री ....वो होगा तेरे बचपन का यार.....लेकिन तुझे इस हालत में देख नहीं सकती।"

"सीमा.., मैं जानती हूँ पर....."।

"पर...दिल है कि मानता नहीं..यही कहना चाहती है ना ?"

"सीमा....."

"मुझे कुछ मत समझा...समझने की ज़रूरत तुझे है।"

"कभी-कभी मन मानता ही नहीं कि वो सौरभ था! पर मन कहता है वो बदल जायेगा।" (कॉफ़ी खत्म कर मैत्री घड़ी की तरफ़ देखती है)।

"वो नहीं बदलने वाला समझी! देख.. तेरी कहानी जो भी सुनेगा, वो यही सलाह देगा कि तू उसे छोड़ दे....एण्ड मूव ऑन। "

"अच्छा बहुत देर हो गयी...ऑफ़िस चले ?" (मैत्री पर्स से पैसे निकालकर बिल के पैसे टेबल पर रख देती है)।

"चलेंगे.....पर एक बात याद रखना, ये पुरुषवादी मानसिकता है। अरे.... इन्होंने भला चैन से औरतों को जीने दिया है जो अब देंगे? मैंने देखा है...और अपनी माँ को झेलते हुए। पर मैंने सही समय पर सही फ़ैसला लिया, अभिनव को तलाक दे दिया, नहीं तो..... पर मेरी माँ नहीं कर सकीं और आज भी काले पानी की सज़ा भुगत रही हैं। ये मर्द हैं मैत्री.....मर्द.. औरत को दबाके रखने में यकीन रखते हैं...औरत दो कदम आगे निकल जाए तो एक निवाला भी इनके गले से न उतरे।

सौरभ तुझे एक वर्किंग वूमन के रूप में नहीं, बल्कि हाउस वाइफ़ के रूप में देखना चाहता है, जो सारी ज़िन्दगी चूल्हा-चौकी...घर,बच्चों और पति में उलझी रहे.....खुद की तरफ़ कभी देख भी न सके और न खुद के बारे में सोच सके.....चल, मैं गाड़ी निकालती हूँ।"

"सुन.....।" मैंने सीमा का हाथ थामा... उसकी आँखों में पानी उतर आया, वो मुझसे नज़रे चुराकर उठने लगी। शायद मुझे समझाना नहीं चाहती थी।

सारा काम निपटाकर घर पहुँचते-पहुँचते रात हो गयी। कोमल खाने की मेज़ पर मेरा इन्तज़ार कर रही होगी। पाँव का दर्द थोड़ा कम हुआ.. डोरबेल बजाई...अरे ! दरवाज़ा खुला हुआ! अंदर जाकर देखा कोमल मेज़ पर खाना लगा रही थी.... उदास सी।

"दरवाज़ा खुला क्यों छोड़ती है गुड़िया ? कितनी बार कहा है मैं घर पर न रहूँ तो दरवाज़ा लगा कर रखना।" उसने मेरी बात पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी और सीधे कमरे में चली गयी। हाथ-मुँह धोकर पौधों को पानी देने बालकनी में गयी तो देखा !..... सौरभ कुर्सी पर बैठा है। अब समझ आया कोमल चुप्पी क्यों साधे थी।

"मैत्री.....आइ ऐम सॉरी। पता नहीं मुझे कल क्या हो गया था, घर जाकर मुझे पछतावा हुआ। भूल जाओ.....प्लीज़.....।मैं कब से तुम्हारा इन्तज़ार कर रहा हूँ.....कोमल से भी मैंने माफ़ी माँग ली, अब तुम भी.....कर दो ना माफ़....अब ऐसा नहीं होगा....प्रॉमिस !" उसने कहते हुए मुझे अंक में भर लिया और मेरे बालों को सहलाने लगा। मैं कुछ भी कह न पाई....समझ में नहीं आ रहा कि कैसे...क्या कहूँ! अचानक! ऐसा लगा, सीमा मेरे पीछे खड़ी कह रही हो -" छोड़ दे उसे...छोड़.....झटक दे उन हाथों को जो शायद अभी तुझे रेशमी एहसास दे रहे हैं.....बाद में यही.....यही फ़िर किसी रात....तुझे दबोच लेंगे..... आज उसके पास नहीं है.....पर कल होगा.....लाइसेंस।